ज्ञान पंचायतों का सिलसिला

-चित्रा सहस्रबुद्धे (20 जनवरी 2024)
लोकविद्या जन आन्दोलन, वाराणसी
lokavidyajanaandolan.blogspot.com

ज्ञान पंचायत का विचार लोकविद्या आन्दोलन के द्वारा सामने आया है। इस लेख में इस विचार को खोलने विविध कार्यों के तहत इसके विकास के कुछ पक्षों को उजागर करने के प्रयास हैं.

समाज में ज्ञान के रूप और सम्बन्ध:

लोकविद्या यानि समाज में बसा ज्ञान, लोकस्थ ज्ञान और इस ज्ञान की प्रतिष्ठा का आंदोलन लोकविद्या जन आंदोलन है। समाज के सामान्य लोग, स्त्री या पुरुष, जिस ज्ञान के बल पर अपनी और समाज की ज़िंदगी चलाते हैं, वह लोकविद्या है। ज़िंदगी को चलाने का अर्थ है, जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों से जुड़े अनेकानेक पक्षों के अस्तित्व, भूमिका, आपसी सम्बन्ध और उनके परीणामों के प्रति सजग दृष्टिकोण का सतत् विकास। सामान्य जीवन में तर्क, कार्य और परिणाम को जांचने की कसौटियां लोकविद्या के बल पर गढ़ी जाती हैं, जीवन के सर्वोच्च मूल्य और आदर्श की मान्यता और उसे पाने के मार्ग भी बनाये जाते हैं।

लोकविद्या जीवन और समाज दोनों को समृद्ध बनाने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसे यूं समझें कि लोकविद्या समाज में बहती ज्ञान धाराओं का समुच्चय है, जो सतत् अपने दायरे को विस्तारित और संकुचित करता रहता है, नवीन ज्ञान धाराओं को समाहित करता है और मृत तथा विनाशकारी धाराओं को त्यागता या नियंत्रित करता है। ये धारायें अपनी स्वायत्त पहचान रखतीं हैं और लोकविद्या में समाहित रहती हैं; ठीक उसी तरह जिसतरह गंगाजी में अनेक जलधारायें मिलकर गंगा हो जाती हैं। लोकविद्या की प्रकृति बंधे या ठहरे पानी की नहीं है, यह सतत् गतिशील और नवीन है।

इन ज्ञान-धाराओं के बीच भाईचारे का रिश्ता समाज को ज्ञानमय, न्यायपूर्ण और सक्रिय बनाता है। समाज की समृद्धता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, का आधार इस भाईचारे के प्रगाढ़ होने से सीधा सम्बन्ध रखता है।

जबसे आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ है, बड़े-बड़े विश्वविद्यालय और स्कूल बने हैं, तब से ज्ञान पर बहस बंद हो गई है। इन सभी शिक्षा स्थानों पर आधुनिक ज्ञान यानि साइंस और साइंस आधारित दृष्टिकोण से पठन-पाठन होता है। साइंस आज के समय का सबसे अधिक संगठित ज्ञान है तथा ज्ञान के क्षेत्र पर उसका एकाधिकार है। समाज में बहतीं ज्ञान धाराओं यानि लोकविद्या को यह तुच्छ करार देता है। ज्ञान के क्षेत्र में ऐसी ऊंच-नीच समाज में ऊंच-नीच और अन्याय को बढ़ाती है।

ज्ञान पंचायत इस अन्यायपूर्ण स्थिति से निकलने के रास्तों की खोज का सामाजिक स्थान है। एक ऐसा स्थान है जहां विविध ज्ञान धाराओं के ज्ञानी आते हैं और ज्ञान वार्ता करते हैं। ज्ञान पंचायत इसतरह ज्ञान पर जन सुनवाई का स्थान कहा जा सकता है। यहां विविध ज्ञान धाराओं और ज्ञानियों में ऊंच-नीच नहीं की जाती और सभी को बराबरी का दर्जा तथा सम्मान है; ग़रीब-अमीर, स्त्री-पुरुष, किसान-प्रोफेसर, कारीगर-इंजीनीयर, दुकानदार-सरकारी कर्मचारी, सभी को अपनी बात और विचार रखने का बराबर का अधिकार है। इन परिस्थितियों में ज्ञान पंचायत विविध ज्ञान-धाराओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बनाने का स्थान है. यह संगठित और लोक ज्ञान के बीच बराबरी और भाईचारे के संबंधों को विकसित करने का स्थान है.

ज्ञान पंचायत में ज्ञान से जुड़े तमाम पहलुओं पर बात होती है और इनके लिए सत्य, न्याय और भाईचारे की कसौटियां क्या हों इस पर विचार होता है। आवश्यकताएं, संसाधनों की उपलब्धता, हुनर एवं प्रबंधन के प्रकार, प्रक्रियाओं के परीणाम और इनके स्थानविशेष की जलवायु, जीवों और समाज पर प्रभाव इत्यादि सभी पक्षों पर वार्ता हो सकती हैं। लेकिन इन ज्ञान वार्ताओं का लक्ष्य विविध ज्ञान धाराओं की सहभागिता को बनाने और न्याय तथा भाईचारे की डोर को मज़बूत करने में है। इस तरह ज्ञान पंचायतें समकालीन सत्य के उद्घाटन और बौद्धिक सत्याग्रह के स्थान भी बनते हैं.

ज्ञान पंचायत समाज में एक ज्ञान आंदोलन का आग़ाज़ करता है। एक ऐसा ज्ञान आंदोलन जो समाज में बसी विविध ज्ञान धाराओं के बारे में, उनके आंतरिक तर्क, जीवन मूल्यों, क्षमता और सीमाओं पर वार्ता को महत्वपूर्ण मुद्दा बनाता है, आपसी लेन-देन से ज्ञान-धाराओं को समृद्ध होने के अवसर देता है और समाज में सभी की सहभागिता की बुनियाद बनाता है।

मनुष्य गतिविधि के हर क्षेत्र में कार्यों को सीखने, करने और उन्हें संगठित करने आदि में आज यह मान लिया गया है कि आधुनिक साइंस आधारित ज्ञान और तकनीकी सबसे उत्तम प्रकार है; हर छोटे बड़े उद्यम में इसीने पैर फैला लिया है। ऐसा करने में अन्य अनेक ज्ञान धारायें खत्म होती हों और समाज के ताने-बाने अगर ध्वस्त भी होते हों तो उसे नज़रंदाज़ कर दिया जाता है। इसी प्रक्रिया में अनेक ज्ञान-धाराओं को ज्ञान मानने से ही इनकार किया जाता है. पर्यावरण प्रदूषण, गांवों और शहरों से सामान्य लोगों का विस्थापन, गरीबी और बेरोज़गारी, आदि संकट इसी प्रक्रिया की देन हैं. ज्ञान पंचायत ज्ञान-धाराओं की स्वायत्तता का पक्षधर हैं. विविध ज्ञान धाराओं के ज्ञान के इस्तेमाल की भूमिका और पैमाने भी ज्ञान पंचायत वार्ता का विषय बनाती है. इसके लिए आवश्यक कसौटियों की खोज करने और उन्हें गढ़ने का दिशाबोध कराने का स्थान भी ज्ञान पंचायत है. तुरंत और दूरगामी हितों को संज्ञान में लेकर सामाजिक भाईचारा के ताने-बाने को मज़बूत करने में मददगार हो, ऐसे न्यायपूर्ण मार्गों को चिन्हित करने में ज्ञान पंचायतों की बहुत बड़ी भूमिका हो सकती है. विविध स्थानों की ज्ञान पंचायतों का दायरा, रूप, विषय और कार्य अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन मौलिक रूप में ये ज्ञान पंचायतें समाज की ज्ञान-धाराओं का संगम स्थल हैं और यहाँ से हर ज्ञान-धारा को और उससे जुड़े समाजों को ज्ञान का दावा करने का हक है.

लोकविद्या जन आन्दोलन की पहल:

लोकविद्या जन आंदोलन ने पिछले दस बारह वर्षों में कई स्थानों पर और कई मुद्दों पर ज्ञान पंचायतें आयोजित की जिनमें वाराणसी, दरभंगा, सिंगरौली, इन्दौर, नागपुर, औरंगाबाद, बंगलुरु, मुंबई, आदि मुख्य हैं. ये ज्ञान पंचायतें विविध नामों से हुई, जैसे किसान ज्ञान पंचायत, कारीगर ज्ञान पंचायत, किसान-कारीगर ज्ञान पंचायत, महिला ज्ञान पंचायत, "विश्वविद्यालय की दीवारें गिरनी चाहिए" नाम से हुई ज्ञान पंचायत, बिजली ज्ञान पंचायत, स्वराज ज्ञान पंचायत, कला ज्ञान पंचायत, वाराणसी ज्ञान पंचायत, वार्ड ज्ञान पंचायत आदि. सबसे अधिक किसान ज्ञान पंचायतें और कारीगर ज्ञान पंचायतें हुईं. वाराणसी और इसके आस-पास के जिलों में ऐसी ज्ञान पंचायतों का क्रम जारी रहा जिनमें तत्कालीन समस्याओं जैसे नोटबंदी का सामान्य लोगों पर आया संकट, फसल बिक्री केन्द्रों की व्यवस्था, महंगे और नपुंसक बीज का बाज़ार आदि विषयों को लिया गया. कुछ बड़ी-बड़ी ज्ञान पंचायतें हईं, जिनमें किसान-कारीगर ज्ञान पंचायत, कला ज्ञान पंचायत और स्वराज ज्ञान पंचायत मुख्य हैं. वाराणसी में वर्ष 2014 से लगभग हर वर्ष अश्विन पूर्णिमा के दिन किसान-कारीगर ज्ञान पंचायत हुईं जिनमें पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी के आस-पास जिलों के अलावा आन्ध्र प्रदेश के चिराला जिले से और मध्य प्रदेश के इंदौर और सिंगरौली जिले के किसान और कारीगर समाजों की भागीदारी हुई.

सबसे पहली ज्ञान पंचायत किसान समाजों के बीच ''बिजली ज्ञान पंचायत'' के नाम से हुई. वाराणासी और आस-पास के जिलों से किसान संगठन, किसान और कारीगर समाजों ने शिरकत की. किसानों ने बिजली आपूर्ति में गांवों और शहरों के बीच भेदभाव का व्यवहार किस तरह से किया जाता है, इसे पंचायत में रखा और इसे हल करने के रास्तों को भी सामने लाया. वार्ता के बाद दो बातें सामने आईं. पहली यह कि बिजली यह शिक्षा, चिकित्सा, पानी, और वित्त की तरह ही एक

राष्ट्रीय संसाधन है और इस पर ग्रामीण समाजों का बराबर का हक है तथा बिजली आपूर्ति की एक न्यायपूर्ण नीति बनाई जानी चाहिए. दूसरा, बिजली आपूर्ति की न्यायपूर्ण नीति जब तक नहीं बने तब तक बिजली उत्पादन के नए प्लांटों के निर्माण पर रोक लगनी चाहिए.

वर्ष 2009 में शिक्षा के आधुनिक किलों की व्यवस्था पर "विश्वविद्यालयों की दीवारें गिरनी चाहिए" नाम से ज्ञान पंचायत हुई. इस ज्ञान पंचायत में किसान, कारीगर और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया. विश्वविद्यालय की दीवार को विविध ढंग से लोगों ने परिभाषित किया. ईंट सीमेंट से बनी यह दीवार समाज में बहुत बड़ी गैर-बराबरी पैदा करती है. यह दीवार केवल भौतिक रूप में ही नहीं है बल्कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषा और ज्ञान, जीवन शैली और जीवनमूल्यों, लिंगभेद आदि की; अनेक दीवारों के सिलसिले का प्रतिनिधित्व करती है. इतनी सारी दीवारों को लांघ पाना सामान्य मनुष्य के लिए संभव नहीं है. इस ज्ञान पंचायत में "विश्वविद्यालय की दीवार गिरनी चाहिए" का अर्थ यह उभर कर आया कि संगठित विद्या और समाज में बसी विद्या के बीच लेनदेन में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए और बराबरी तथा भाईचारे का सम्बन्ध होना चाहिए.

लोकविद्या जन आन्दोलन के कार्यकर्ताओं के बीच हुई अनेक वार्ताओं में यह बात उभर कर आई कि लोकविद्या और कलाओं में जो ज्ञान है उसमें तर्क, मूल्य और रूप के आधार बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं. इस विचार ने कला ज्ञान पंचायतों को आयोजित करने का मार्ग खोला. वाराणसी के अलावा मध्य प्रदेश में इंदौर और महाराष्ट्र में औरंगाबाद तथा मुम्बई में ये ज्ञान पंचायतें आयोजित की गईं. कला ज्ञान पंचायतों के आयोजनों से कई महत्वपूर्ण बातें उभर कर आईं. एक तो यह कि कलाकर्म ज्ञान का वह सर्वसुलभ मार्ग है, जिसमें सामान्य व्यक्ति दुनिया के बारे में अपनी समझ साझा करता है और इसके लिए उसे विशेष शिक्षा की दरकार नहीं होती. दूसरा, संवेदना यह ज्ञान का अन्तर्निहित गुण है. कला ज्ञान पंचायतों से जो महत्वपूर्ण सन्देश निकल कर आया वह यह कि संगठित ज्ञान और लोकविद्या में भाईचारे के संबंधों का सृजन करने में संत दर्शन की परम्पराएँ एक पुख्ता मार्ग प्रदान करती हैं. वास्तव में संत दर्शन की परम्पराएँ इस देश में ज्ञान-पंचायतों की परम्पराओं को ही उद्घाटित करती हैं. आधुनिक ज्ञान की व्यवस्थाओं ने सामान्य लोगों से ज्ञान संवाद की अनिवार्यता को ख़त्म कर दिया. संत परंपरायें सामान्य जीवन को ज्ञान और कर्म का प्रमुख स्थान बनाती रही हैं. यही दार्शनिक संवाद का स्थान भी रहा. वर्ष 2021-23 के ऐतिहासिक किसान आन्दोलन ने इस सोच को मज़बूती दी.

किसान कारीगर पंचायतों का सिलसिला पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों में और सिंगरौली तथा इंदौर के आस-पास चला. औद्योगीकरण, शहरों का विस्तार, लोकविद्या समाजों के विस्थापन का दौर पिछले दशक फिर से तेज़ हुआ. ऐसे में ज्ञान पंचायतों ने जल-जंगल-ज़मीन के आन्दोलनों को ज्ञान-धाराओं और उन धाराओं के बल पर जिंदा रहने वाले ज्ञानी समाजों को ख़त्म करने के विरोध का आन्दोलन करार दिया. किसान और कारीगर समाजों की अलग-अलग और संयुक्त पंचायतें भी हुईं. इन ज्ञान पंचायतों में इन समाजों ने लोकविद्या का दावा पेश किया. अधिकांश ज्ञान पंचायतों से मुख्य दो बातें उभर कर आईं. पहली यह कि समाज को गरीबी, बेरोज़गारी और अज्ञानता से मुक्ति का रास्ता लोकविद्या को बराबर के ज्ञान का दर्जा मिलने में है और दूसरा, किसान और कारीगर समाजों के हर परिवार में सरकारी कर्मचारी के जैसी पक्की, नियमित और बराबर की आय होनी चाहिए और इसे सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी सरकारों को उठानी चाहिए.

लोकविद्या को ज्ञान का दर्जा मिलें इस दावे ने स्वराज ज्ञान पंचायतों को आयोजित करने के मार्ग खोले. लोकविद्या के दावे मूर्त रूप लें इसके लिए समाज-संगठन के ऐसे प्रकारों पर विचार क्रियाओं को बल मिला जो लोकविद्या-समाजों के जीवनमूल्य और तर्क के प्रकारों को समाहित करें. संत दर्शन में ऐसे समाज संगठनों के संकेत मिलते हैं. जैसे कबीर का अमरपुरी, रविदास का बेगमपुरा, बासवान्ना का कल्यानपुरी, तुलसीदास का रामराज्य और गांधी का स्वराज. इन सभी में निश्चित ही कुछ भिन्नता होगी लेकिन इन सभी का ज्ञानगत आधार लोकविद्या के समकालीन रूपों में बसा है. इस सोच

ने मुख्यत: वाराणसी में स्वराज ज्ञान पंचायतों का सिलसिला शुरू किया. इन ज्ञान पंचायतों के तहत भारत के लोकविद्या-समाज (बहुजन समाज) की राज परम्पराओं, लोकपराम्पराओं और दर्शन परम्पराओं को वार्ता का विषय बनाया और आधुनिक समाज-संगठन के बुनियादी अंतर्विरोधों के निराकरण के लिए दिशाबोध को हासिल करने के प्रयास हुए.

इस दिशा में 'वाराणसी ज्ञान पंचायत' और 'वार्ड ज्ञान पंचायत' गढ़ने के प्रयासों का उल्लेख किया जा सकता है.

वाराणसी ज्ञान पंचायत को वाराणसी के निवासियों की ज्ञान पंचायत के रूप में विकसित करने के प्रयास हुए है. यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान मंच है. इस मंच की मान्यता है कि हर मनुष्य, स्त्री और पुरुष, ज्ञानी है. यह ज्ञान पंचायत ज्ञान पर जन-सुनवाई का रूप भी है. वाराणसी ज्ञान पंचायत, वाराणसी की व्यवस्थाओं को गढ़ने में सभी समाजों के ज्ञान की भागीदारी और सभी के ज्ञान को बराबर की प्रतिष्ठा का आग्रह करती है. इसकी एक आयोजन समिति है, जो नगर में अलग-अलग स्थानों पर ज्वलंत मुद्दों पर विमर्श को आकार देती है और एक छोटी पत्रिका 'सुर साधना' के नाम से प्रकाशित भी की जाती है. अभी तक इसा पत्रिका के चार अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं. वाराणसी ज्ञान पंचायत में रूचि लेने वाले समर्थक लोगों का एक व्हाट्सएप समूह भी बना है.

हाल ही में नगर निगम के चुनाव के अवसर पर वाराणसी ज्ञान पंचायत ने लगभग डेढ़ माह तक घाटों पर 'लोकनीति संवाद' के नाम से विमर्श चलाया. इस विमर्श में अनेक प्रश्नों पर विचार हुआ. लोकनीति बनाम राजनीति, स्थानीय निकायों की नगर और नागरिकों के प्रति ज़िम्मेदारी, लोकविद्या और लोकनीति के बीच अन्योन्याश्रित रिश्ता, नगर विकास और व्यवस्थाओं में विविध ज्ञान-धाराओं के समावेश का आग्रह, नगर की नैतिक विरासत और दर्शन, गाँव-शहर के बीच सम्बन्ध, नगर का धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक ताना-बाना, जैसे विषयों की वैचारिकी के प्रकाश में नगर का पर्यावरण, गंगाजी और घाटों की स्वछता और रखरखाव, मल्लाहों और नाविकों के विस्थापन का सवाल, नगर में ऑटो चालकों की परेशानियाँ, सीवर और कूड़े का निस्तारण आदि जैसे दैनिक जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं के प्रति पार्षदों के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार को संवाद में स्थान मिला. विविध विचारधाराओं, कार्यक्षेत्रों और संस्थाओं से जुड़े शहर के व्यक्तियों ने इस विमर्श में हिस्सा लिया. ये विमर्श गंगाजी के घाट पर खुले में ही आयोजित की गईं और लोक, सार्वजनिकता और लोकनीति के अर्थों के समकालीन सन्दर्भों में व्याख्या के प्रयास हुए. लेकिन महत्वपूर्ण बात यह रही कि इन संवादों से 'वार्ड ज्ञान पंचायतों' को गढ़ने का विचार चर्चा में आया. वार्ड ज्ञान पंचायत एक वार्ड के विविध समाजों की ज्ञान पंचायत होगी जो अपने वार्ड की व्यवस्थाओं को समाजों के ज्ञान की भागीदारी के साथ प्रबंधन का ज्ञान आधार बनाने की ओर बढ़ेगी. कम से कम दो वार्डों में ज्ञान पंचायत गढ़ने के कार्यक्रम हाथ में लिए गए.